

TDC PART I HISTORY (HON) PAPER I

अनिल कुमार

इतिहास विभाग, अरुंधतीजी आरु
कॉलेज, महाराजगंज (खिचने)

मध्य पाषाण काल — Mesolithic Age

(1)

NOVEMBER 07
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10
11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24
25 26 27 28 29 30

X OCTOBER 15
MONDAY
288-077 WEEK-42

मध्य पाषाण युग संस्कृति का काल
शायोंकि इस काल में न तो पूरा पाषाण की
विशेषताओं की पूर्ण रूप से त्यागा गया था
और न ही नव पाषाण काल की विशेषताओं को
पूर्ण रूप से अपनाया गया था। वास्तव में मध्य
पाषाण काल मेसोलिथिक शब्द का हिन्दी रूपान्तरण
है। मुख्य रूप से भीमबेटका, रेणिगुण्टा, मध्य सोन
घाटी तथा बेलन घाटी में किये गये शोध के
परिणामस्वरूप मध्य पाषाण काल पर प्रचुर प्रकाश
पड़ा और इतिहासकारों की इस धारणा को, कि
पूर्व पाषाण काल तथा नव पाषाण काल को
जोड़ने वाली कोई कड़ी नहीं है, मिथ्या साबित हुई।
वास्तुतः यह काल नवपाषाण युग का अग्रगामी था।

भारत में अब से करीब
8000 वर्ष पूर्व, हिम युग के समाप्त होने और
नूतन काल के आरंभ होने के साथ ही मध्य पाषाण
कालीन संस्कृति का उदय हुआ। जलवायवीय परिवर्तनों
ने इस संस्कृति के विकास को प्रभावित किया। इस
समय बर्फ की जगह घास से भरे मैदान एवं
जंगल उगने आरम्भ हो गये। नये प्रकार के
वनस्पति एवं जानवरों का प्रादुर्भाव हुआ
जहाँ में रहने वाले विशालकाय जानवरों (मेंढक,
रेन्डियर) की जगह पर घास खाकर जीवित
रहने वाले छोटे जानवर खरगोश, हिरण, बकरी
आदि पैदा हुये। छोटे पशुओं के आखेट के
लिए छोटे हथियारों की आवश्यकता पड़ी। अतः
मानव ने लघु पाषाणोपकरण बनाना आरंभ
किया। छोटे होते हुये भी नये हथियार जमा

16 OCTOBER
TUESDAY

OCTOBER 07

उपयोगी एवं सांघातिक अन्तर्गत रखते थे।
इनका विकास उच्च-पूर्व-पाषाणिक ब्लेड
परम्परा से हुआ।

वदसते परिवेश का प्रभाव
सबसे अधिक उसके भोजन पर पड़ा। ये लोग घास
के दानों को एकत्रित कर खाने लगे। विशालकाय
आनवरो के अगह छोटे आनवर भोजन में शामिल
होने लगे। जलचर जैसे मछली, मैटक, कछुआ
केकड़ा आदि भी क्षुधा शान्त करने के साधन बनने
लगे। इन जलचरों का शिकार करने के लिए सर्वप्रथम
लकड़ी का नाव भी इसी काल में बनाई गई। इस
प्रकार, इस काल में मानव का जीवन शिकार एवं
संचय पर आधारित था। खाद्यान्न जब प्राप्त होता
कठिन होता था तब शिकार की खोज करने की क्षुधा
शान्त की जाती थी। खाद्यान्न में, फल, कन्दमूल
तथा अन्य वनस्पतियों भोजन के मुख्य अंग थे।

सरायनहर राय,

महदहा तथा दमदमा के क्षेत्रों के शोध परिणाम
स्पष्ट संकेत देते हैं कि इन स्थानों में परिवारिक
दकाइयां गठित होने लगी थी। आवास स्थल
स्थायी बनने लगे थे। शैल चित्रों तथा खुदई के
पशुचित्र यह तथ्य सामने आया कि इस काल में आखेट
काना एक सामाजिक क्रिया थी। बड़े पशुओं का
शिकार समाज में अधिकांश लोग मिलकर करते
थे तथा मींस का वितरण हो जाने पर उसे भून कर
खा लिया करते थे। शिकार को गड्ढे में जाल
बिछाकर भी किया जाता था। पशुचित्रण, भाँके
तथा हारून का प्रयोग शिकार करने में अस्त्रों के

रूप में किया जाता था। बच्चों की परवरिश तथा स्वाभाविक संग्रह में स्थितियों की विशेष भूमिका रहती थी। आदमगढ़ नामक स्थान पर पशुपालन करने के भी संकेत मिले हैं। अर्थात् इस काल में विकास की प्रक्रिया प्रारंभ हो चुकी थी क्योंकि समूह आलेख की प्रक्रिया अथवा विस्तृत आवासों का अस्तित्व बिना नेतृत्व के सम्भव नहीं है। प्राण्य प्रजातियों के अनुसार यह भी स्पष्ट है कि इस काल में छोटे स्तर पर व्यापार भी वस्तु-विनिमय के रूप में विकसित होने लगा था।

मध्य पाषाण काल में, तत्कालीन मनुष्यों में सौंदर्य बोध होना भी चित्रों के माध्यम से स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। बजोर, आदमगढ़ तथा भीमबैठका इत्यादि स्थानों से प्राप्त आभूषणों के अवशेष इसी ओर संकेत करते हैं। अन्य बहुत से चित्र इन लोगों की कलात्मकता की ओर भी ध्यान आकर्षित करते हैं जो मुख्य रूप से पशु वर्ग पर आधारित हैं। जिनका ये मुख्य रूप से भक्षण करते रहे होंगे, जैसे गेंडा, भैंस, बैल, सूअर तथा हिरन इत्यादि। इसके अतिरिक्त दैनिक जीवन से संबंधित अन्य क्रियाओं की जानकारी भी इन शैलचित्रों में देखने को मिलती है। जैसे मधु संग्रह करना तथा नृत्य की विभिन्न कलाएँ। इन शैलचित्रों में मध्यकाल के अन्तर्गत आने वाले चित्रों में एक विकासक्रम दृष्टिगोचर होता है। प्रथम वर्ग में अनुकरणात्मक अथवा प्राकृतिक चित्र द्वितीय वर्ग में भावात्मक चित्र तीसरे वर्ग में प्रतीकात्मक चित्र एवं अंतिम वर्ग के चित्र अनुकरणात्मक कहलाते हैं।